agastyAShTakam

शिवाष्टकम् अगस्त्यकृत अथवा अगस्त्याष्टकम्

Document Information

Text title : shivAShTakam by Agastya Rishi

File name : agastyAShTakam.itx

Category : aShTaka, shiva

Location : doc_shiva

Transliterated by : N.Balasubramanian bbalu at sify.com

Proofread by : N.Balasubramanian, Aruna Narayanan

Description-comments : From stotrArNavaH 02-20

Latest update : August 10, 2007

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

January 7, 2022

sanskritdocuments.org

शिवाष्टकम् अगस्त्यकृत अथवा अगस्त्यताष्टकम्

अगस्त्यप्रोक्तं शिवाष्टकम् ।
अद्य मे सफलं जन्म चाद्य मे सफलं तपः ।
अद्य मे सफलं ज्ञानं शम्भो त्वत्पाददर्शनात् ॥ १॥

कृतार्थोऽहं कृतार्थोऽहं कृतार्थोऽहं महेश्वर ।
अद्य ते पादपद्मस्य दर्शनात्भक्तवत्सल ॥ २॥

शिवश्शम्भुः शिवश्शम्भुः शिवश्शम्भुः शिवश्शिवः ।
इति व्याहरतो नित्यं दिनान्यायान्तु यान्तु मे ॥ ३॥

शिवे भक्तिश्शिवे भक्तिश्शिवे भक्तिर्भवेभवे ।
सदा भूयात् सदा भूयात्सदा भूयात्सुनिश्चला ॥ ४॥

आजन्म मरणं यस्य महादेवान्यदैवतम् ।
माजनिष्यत मद्वंशे जातो वा द्राग्विपद्यताम् ॥ ५॥

जातस्य जायमानस्य गर्भस्थस्याऽपि देहिनः ।
माभून्मम कुले जन्म यस्य शम्भुर्न-दैवतम् ॥ ६॥

वयं धन्या वयं धन्या वयं धन्या जगत्त्रये ।
आदिदेवो महादेवो यदस्मत्कुलदैवतम् ॥ ७॥

हर शम्भो महादेव विश्वेशामरवल्लभ ।
शिवशङ्कर सर्वात्मन्नीलकण्ठ नमोऽस्तु ते ॥ ८॥

अगस्त्याष्टकमेतत्तु यः पठेच्छिवसन्निधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥ ९॥

॥ इत्यगस्त्याष्टकं सम्पूर्णम् ॥

Encoded and proofread by N.Balasubramaniam

agastyAShTakam

pdf was typeset on January 7, 2022

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*